

CBSE प्रश्न पत्र 2018

कक्षा 12 इतिहास

निर्धारित समय : 3 घण्टे

अधिकतम अंक : 80

सामान्य निर्देश:

- सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। कुछ प्रश्नों में आंतरिक विकल्प दिए गए हैं। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने अंकित किए गए हैं।
- प्रश्न संख्या 1 से 3 दो अंकों वाले हैं, प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 30 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- प्रश्न संख्या 4 से 9 चार अंकों वाले हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 100 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए। विद्यार्थियों को इस खण्ड से केवल पाँच प्रश्नों को हल करना चाहिए।
- प्रश्न संख्या 10 मूल्य आधारित प्रश्न है और अनिवार्य है, यह प्रश्न भी चार अंक का है।
- प्रश्न संख्या 11 से 13 आठ अंकों वाले हैं। इनमें से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 350 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिए।
- प्रश्न संख्या 14 से 16 स्रोत आधारित हैं। इनमें कोई आन्तरिक विकल्प नहीं है।
- प्रश्न संख्या 17 मानचित्र सम्बन्धी है, जिसमें लक्षणों को पहचानना तथा महत्वपूर्ण मंदों को दर्शाना शामिल है। मानचित्र को उत्तर-पुस्तिका के साथ नत्थी कीजिए।

खण्ड क

नीचे दिए गए सभी प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

1. पुरातत्वविदों के हड़प्पाकालीन संस्कृति में शिल्प उत्पादन के केन्द्रों की पहचान के आधार का वर्णन कीजिए।

उत्तर- शिल्प उत्पादन के केंद्रों की पहचान के लिए पुरातत्वविद सामान्यतः

- कच्चा माल जैसे प्रस्तर पिण्डें पूरे शंख तथा तांबा अयस्क
- औजार
- अपूर्ण वस्तुएँ
- त्याग दिया गया माल तथा कूड़ा करकट यहां तक कि कूड़ा करकट शिल्प कार्य के सबसे अच्छे संकेतकों में से एक है। उदाहरण के लिए, यदि वस्तुओं के निर्माण के लिए शंख अथवा पत्थर को काटा जाता था तो इन पदार्थों के टुकड़े कूड़े के रूप में उत्पादन के स्थान पर फेंक दिए जाते थे।
- पूर्ण वस्तुएं - कभी कभी बड़े बेकार टुकड़ों को छोटे आकार की वस्तुएं बनाने के लिए प्रयोग किया जाता था। छोटे विशिष्ट केन्द्रों के अतिरिक्त मोहनजोदड़ों तथा हड़प्पा जैसे बड़े शहरों में भी शिल्प उत्पादन किया जाता था।
(किन्हीं दो बिन्दुओं का परीक्षण)

2. भारत में मुगल शासन के दौरान ग्राम पंचायतों के राजस्व के स्रोतों की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- भारत में मुगल शासन के दौरान ग्रामीण पंचायतों के राजस्व के स्रोत:

- i. पंचायत का खर्चा गांव के उस आम खजाने से चलता था जिसमें हर व्यक्ति अपना योगदान देता था।
- ii. पंचायतों को जुर्माना लगाने का भी अधिकार था।
- iii. कृषि कर
- iv. कोई भी अन्य प्रासंगिक बिन्दु।
(किसी एक बिन्दु का स्पष्टीकरण)

3. 1859 में अंग्रेजों द्वारा पारित 'परिसीमन कानून' के प्रभाव की जाँच कीजिए।

उत्तर- 1859 में ब्रिटिश द्वारा लागू किए गए परिसीमन कानून का प्रभाव:

- i. ऋणदाता रैयत के बीच हस्ताक्षरित ऋणपत्र केवल तीन वर्षों के लिए मान्य किया गया था।
- ii. इस कानून का उद्देश्य बहुत समय तक ब्याज को संचित करने से रोकना था।
- iii. ऋणदाता ने इस कानून को घुमाकर अपने पक्ष में कर लिया और रैयत के हर तीसरे साल एक नया बंधपत्र भरवाने लगा।
- iv. जब कोई नया बांड हस्ताक्षरित होता तो न चुकाई गई शेष राशी अर्थात मूलधन और उस पर उत्पन्न तथा इकट्ठा हुए सम्पूर्ण ब्याज को मूलधन के रूप में दर्ज किया जाता और उस पर नए सिरे से ब्याज लगने लगता
- v. जब ऋण चुकाए जाते तो ऋणदाता रैयत को उसकी रसीद देने से इनकार कर देते थे, बंधपत्रों में जाली आँकड़ें भर लेते थे और किसानों की धन संपदा पर ही कब्जा कर लेते थे।
- vi. दस्तावेज और बंधपत्र नयी अत्याचारपूर्ण प्रमाण के प्रतीक बन गए।
- vii. किसानों की दुख तकलीफ का कारण वह सब बंधपत्र और दस्तावेजों की व्यवस्था ही थी।
- viii. किसान लाचार थे क्योंकि उन्हें जिन्दा रहने के लिए ऋण चाहिए थे और ऋण दाता कानूनी दस्तावेजों के बिना ऋण देने के लिए तैयार नहीं थे।
- ix. अन्य कोई प्रासंगिक बिन्दु।

खण्ड ख

अनुभाग I

निम्नलिखित में से किन्हीं पाँच प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

4. "हड़प्पाई समाज में जटिल फैसले लेने और उन्हें कार्यान्वित करने के संकेत मिलते हैं।" इस कथन के आलोक में स्पष्ट कीजिए कि क्या हड़प्पाई समाज में शासकों का शासन रहा होगा।

उत्तर- हड़प्पाई समाज में जटिल फैसले लेने और उन्हें क्रियान्वित करने के संकेत मिलते हैं:

- i. मोहनजोदड़ों में मिले एक विशाल भवन को एक प्रासाद की संज्ञा दी परन्तु इससे संबन्धित कोई भव्य वस्तु नहीं मिली है।
- ii. एक पत्थर की मूर्ति को 'पुरोहित राजा' की संज्ञा दी गई है और यह नाम आज भी प्रचलित है।
- iii. कुछ पुरातत्वविद् इस मत के हैं कि हड़प्पा समाज में शासक नहीं थे तथा सभी की स्थिति समान थी।
- iv. कुछ पुरातत्वविद् यह मानते हैं कि यहां कोई एक ही नहीं बल्कि कई शासक थे जैसे मोहनजोदड़ों ,हड़प्पा आदि के अपने अलग अलग राजा होते थे।
- v. इतिहासकार यह भी तर्क देते हैं कि यह एक ही राज्य था जैसा कि पुरावस्तुओं में समानताओं , नियोजित बस्तियों के

साक्ष्यों ईंटों के आकार में निश्चित अनुपात तथा बस्तियों के कच्चे माल के स्रोतों के समीप संस्थापित होने से यह स्पष्ट है।

- vi. अभी तक की स्थिति में अन्तिम परिकल्पना सबसे युक्तिसंगत प्रतीत होती है क्योंकि यह कदाचित् सम्भव नहीं लगता कि पूरे के पूरे समुदायों द्वारा इकट्ठे ऐसे जटिल निर्णय लिए और क्रियान्वित किये जाते होंगे।
- vii. हड़प्पा पुरावस्तुओं में आसाधरण एकरूपता मिलती है।
- viii. ईंटें जिनका उत्पादन स्पष्ट रूप से किसी एक केंद्र पर नहीं होता था, जम्मू से गुजरात तक एक अनुपात में थी।
- ix. ईंटें बनाने और विशाल दिवारों तथा चबूतरों के निर्माण के लिए श्रम संगठित किया गया था।
- x. अन्य कोई प्रासंगिक बिन्दु।

5. 600 ई.पू. से 600 ई. में देहात के लोगों की आर्थिक और सामाजिक स्थितियों का वर्णन कीजिए।

उत्तर- 600 ई.पू. से 600 ई. में ग्रामीण क्षेत्रों की सामाजिक और आर्थिक स्थितियाँ:

o आर्थिक स्थितियाँ:-

- i. जातक और पंचतंत्र के अनुसार कुछ राजा की प्रजा किसी प्रकार से दुखी रहती थी तथा उनकी शिकायत थी कि रात में डकैत उन पर हमला करते हैं तो दिन में कर इकट्ठा करने वाले अधिकारी। ऐसी परिस्थिति से बचने के लिए लोग अपने अपने गांव छोड़कर जंगल में बस गए।
- ii. उपज बढ़ाने के अनेक तरीकों जैसे (अ) हल का प्रचलन, (ब) लोहे के फाल वाले हलों के माध्यम से उर्वरभूमि की जुताई, (स) सिंचाई के माध्यम जैसे कुएं तालाब, नहरों का उपयोग बढ़ाया गया
- iii. ईसवी की आरम्भिक शताब्दियों से ही भूमि दान के प्रमाण मिलते हैं जैसे प्रभावती गुप्ता के अभिलेख।
- iv. कुछ इतिहासकारों का मानना है कि राजा स्वयं को उत्कृष्ट स्तर के मानव के रूप में प्रदर्शित करना चाहते थे।
- v. भूमिदान से दुर्बल होते राजनीतिक प्रभुत्व, सामंतों पर दुर्बलता को दूर कर शक्ति का आड़म्बर प्रस्तुत करना चाहते थे।
- vi. भूमिदान के प्रचलन से राज्य तथा किसानों के बीच संबंध की झांकी मिलती है।
- vii. लेकिन कुछ लोग ऐसे भी थे जिन पर अधिकारियों या सामंतों का नियन्त्रण नहीं था जैसे कि पशुपालक संग्रहक, शिकारी, मछुआरे, शिल्पकार और झूम की खेती करने वाले लोग।
- viii. अन्य कोई प्रासंगिक बिन्दु।

o सामाजिक स्थिति:-

- i. खेती से जुड़े लोगों में उत्तरोत्तर भेद बढ़ता जा रहा था भूमिहीन खेतीहर श्रमिक, छोटे किसान और बड़े बड़े जमींदार।
- ii. बड़े-बड़े जमींदार और ग्राम प्रधान शक्तिशाली माने जाते थे जो प्रायः किसानों पर नियंत्रण रखते थे।
- iii. आरम्भिक तमिल (संगम) साहित्य में भी गाँवों में रहने वाले विभिन्न वर्गों का उल्लेख है। बड़े जमींदार, हलवाहा या उल्लवर और दास अण्मिई।
- iv. यह संभव है कि वर्गों की यह विभिन्नता स्वामित्व श्रम और नयी प्रौद्योगिकी के उपयोग पर आधारित है।
- v. गृहपति मुखिया होता था और घर में रहने वाली महिलाओं, बच्चों, नौकरों और दासों पर नियंत्रण करता था, वह भूमि, जानवरों का मालिक होता था।
- vi. कभी-कभी इस शब्द का प्रयोग नगरों में रहने वाले सभ्रान्त व्यक्तियों और व्यापारियों के लिए भी होता था।

- vii. महिलाओं का संपत्ति पर अधिकार। जाति/वर्ण पर आधारित बहुत से क्षेत्रों में लोगों का होना।
- viii. बौद्ध साहित्य बताता है कि लोग जो विभिन्न जाति या वर्ण के थे वह धन और शक्ति का अर्जन कर लेते थे।
- ix. पितृवंशशक्ति और बहु विवाह
- x. अन्य कई प्रासंगिक बिन्दु।

6. "इब्न बतूता ने भारतीय उपमहाद्वीप के शहरों को लोगों के लिए व्यापक अवसरों से भरपूर पाया।" दिल्ली शहर के संदर्भ में इस कथन की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- इब्न-बतूता तथा अनजाने को जानने की उत्कंठा

- i. बतूता के अनुसार दिल्ली एक बड़ा शहर, विशाल आबादी वाला और भारत में सबसे बड़ा था।
- ii. शहर के चारों ओर बनी प्राचीर अतुलनीय है। दीवार की चौड़ाई ग्यारह हाथ है और इसके भीतर रात्री के पहरेदार तथा द्वारपालों के कक्ष हैं।
- iii. शहर के अठाईस द्वार हैं जिसमें बदायूँ दरवाजा सबसे विशाल है, माड़वी दरवाजे के भीतर अनाज मंडी है गुल दरवाजे के बगल में फलों का बगीचा है।
- iv. दिल्ली शहर में एक बेहतरीन कब्रगाह है जिसके ऊपर गुंबद बनाई गयी है।
- v. दिल्ली बड़े क्षेत्र में फैला घनी जनसंख्या वाला तथा समृद्ध क्षेत्र था।
- vi. यहाँ भीड़-भाड़ वाली सड़के तथा चमक-दमक वाले और रंगीन बाजार थे जो विविध प्रकार की वस्तुओं से भरे रहते थे।
- vii. बाजार सामाजिक तथा आर्थिक गतिविधियों के केंद्र भी थे। अधिकांश बाजारों में एक मस्जिद तथा मंदिर होता था और उनमें से कम से कम कुछ में तो नर्तकों, संगीतकारों तथा गायकों के सार्वजनिक प्रदर्शन के स्थान भी चिन्हित थे।
- viii. शहर अपनी संपत्ति का एक बड़ा भाग गाँव से अधिशेष के अधिग्रहण से प्राप्त करते थे।
- ix. बाजार में संगीत।
- x. संसार की अनूठी प्रणाली (उल्लूक और दाबा)
- xi. नारियल और पान।

7. धार्मिक और राजनीतिक संस्था के रूप में खिलाफत की बढ़ती हुई विषयशक्ति की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप सूफीवाद का विकास हुआ। स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- सूफीवाद:

- i. विषय शक्ति के विरुद्ध कुछ आध्यात्मिक लोगों का रहस्यवाद और वैराग्य की और झुकाव बढ़ा।
- ii. इन्होंने मुक्ति की प्राप्ति के लिए ईश्वर की भक्ति और उनके आदेशों के पालन पर बल दिया।
- iii. सूफियों ने कुरान की व्याख्या अपने निजी अनुभवों के आधार पर की।
- iv. इन लोगों ने रूढ़िवादी परिभाषाओं तथा धर्माचार्यों द्वारा की गई कुरान की आलोचना की।
- v. ग्यारहवीं शताब्दी के आते आते सूफीवाद एक पूर्ण विकसित आन्दोलन था जिसका सूफी और कुरान से जुड़ा अपना साहित्य था।
- vi. सूफी अपने को एक संगठित समुदाय खानकाह के इर्द-गिर्द स्थापित करते थे जिसका नियन्त्रण शेख, पीर तथा मुर्शीद के हाथ में था।
- vii. सूफी सिलसिला जो कि शेख और मुरीद के बीच की कड़ी था।

- viii. बारहवीं शताब्दी के अंत में भारत आने वाले सूफी समुदायों में चिश्ती समुदाय सबसे अधिक प्रभावशाली रहे।
- ix. सूफी मत के मुख्य उपदेशक शेख मुइनुद्दीन चिश्ती शेख निजामुद्दीन औलिया आदि थे।
- x. सूफी दीक्षा लेने वाले को निष्ठा का वचन देना होता था और सिर मुंडाकर थेंगड़ी लगे वस्त्र धारण करने पड़ते थे।
- xi. समुदाय रसोई फुतूह पर चलती थी।
- xii. कव्वाली और जिक्र का प्रचलन था।
- xiii. सूफी संतों की दरगाह पर की गई जियारत पर संत के आध्यात्मिक यानि बरकत की कामना की जाती थी।
- xiv. आध्यात्मिक पूर्वजों की दरगाह पर अनेक तीर्थ यात्री आने लगे।
- xv. अन्य कई प्रासंगिक बिन्दु।

8. 1857 के विद्रोह में अवध के ताल्लुकदारों की सहभागिता की जाँच कीजिए।

उत्तर- 1857 के विद्रोह में अवध के ताल्लुकदारों की भागेदारी

- i. अधिग्रहण के बाद ताल्लुकदारों की सत्ताएं भंग कर दी गई।
- ii. अवध के देहात में ताल्लुकदारों की जागीरें और किले बिखरे हुए थे पीढ़ियों से ये लोग अपने इलाके में जमीन और सत्ता पर नियन्त्रण रखते थे।
- iii. अंग्रेज इन ताल्लुकदारों की सत्ता बरदास्त करने को तैयार नहीं थे।
- iv. अधिग्रहण के बाद ताल्लुकदारों की सेनाएं भंग कर दी गई और उनके दुर्ग ध्वस्त कर दिए गए।
- v. अधिग्रहण के बाद एकमुस्त बन्दोबस्त से ब्रिटिश भूराजस्व व्यवस्था लागू कर दी गई।
- vi. अंग्रेजों के आने से पहले ताल्लुकदारों के पास अवध के 67 प्रतिशत गाँव थे जो घट कर 38 प्रतिशत रह गए।
- vii. दक्षिण अवध के ताल्लुकदारों को सबसे बुरी मार पड़ी जब आधे के ज्यादा गांव हाथ से जाते रहे।
- viii. ब्रिटिश भूराजस्व अधिकारियों का मानना था कि ताल्लुकदारों को हटा कर वे जमीन असली मालिकों के हाथ में सौंप देंगे।
- ix. अवध के इलाकों का मूल्य निर्धारण बहुत बढ़ा-चढ़ा कर किया गया।
- x. कुछ स्थानों पर तो राजस्व माँग में 30 से 70 प्रतिशत तक इजाफा हुआ जिससे न तो ताल्लुकदार और न ही काश्तकार इससे खुश थे।
- xi. ताल्लुकदारों की सत्ता छिनने से पूरी सामाजिक व्यवस्था भंग हो गई थी।
- xii. अवध जैसे इलाकों में 1857 के दौरान प्रतिरोध बेहद सधन और लंबा चला था क्योंकि बागडोर ताल्लुकदारों और किसानों के हाथ में थी।
- xiii. बहुत सारे ताल्लुकदार अवध के नवाब के प्रति निष्ठा रखते थे और वे लखनऊ जाकर बेगम हजरत महल के खेमे में शामिल हो गए और कुछ तो बेगम की पराजय के बाद भी उनके साथ डटे रहे।
- xiv. अन्य कई प्रासंगिक बिन्दु।

9. भारत में औपनिवेशिक काल के दौरान कुछ पर्वतीय स्थल (हिल स्टेशन) क्यों विकसित किए गए? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर- हिल स्टेशन औपनिवेशिक शहरी विकास का खास पहलु:-

- i. हिल स्टेशनों की स्थापना और बसावट का सम्बन्ध ब्रिटिश सेना की जरूरतों से था जैसे - शिमला, माउंटआबू और दार्जीलिंग।
- ii. ये हिल स्टेशन फौजियों को ठहराने, सरहद की चौकसी करने और दुश्मनों के खिलाफ हमला बोलने के लिए महत्वपूर्ण

स्थान थे।

- iii. पहाड़ों की मृदु और ठंडी जलवायु को फायदे की चीज माना जाता था। खासतौर से इसलिए की अंग्रेज गर्म मौसम को बीमारियां पैदा करने वाला मानते थे जैसे हैजा और मलेरिया की आशंका ज्यादा रहती थी।
- iv. सेना की भारी भरकम मौजूदगी के कारण ये स्थान छावनी बन गए थे।
- v. हिल स्टेशनों को सेनेटोरियम के रूप में विकसित किया गया था जहाँ सिपाहियों को विश्राम और इलाज कराने के लिए भेजा जाता था।
- vi. वायसराय अपने पूरे अमले के साथ हर साल गर्मियों में यहाँ ढेरा डाल लिया करते थे।
- vii. नये शासकों को यहाँ की आबोहवा काफी सुहाती थी।
- viii. हिल स्टेशनों में यूरोपीय शैली की बस्तियां बसाना चाहते थे। अलग-अलग मकानों के बाद एक दूसरे से कटे विला और बागों के बीच में कॉटेज बनाए जाते थे।
- ix. सामाजिक दावत, चाय बैठक, पिकनिक रात्री भोज, मेले, रेस और रंगमंच जैसी घटनाओं के रूप में यूरोपियों का सामाजिक जीवन भी एक खास किस्म था।
- x. रेलवे के आने से ये पर्वतीय सैरगाहे बहुत तरह के लोगों की पहुँच में आ गयी।
- xi. हिल स्टेशन औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था के लिए भी महत्वपूर्ण थे। पास के इलाकों में चाय और कॉफी बागानों की स्थापना से मैदानी इलाकों से बड़ी संख्या में मजदूर वहाँ आने लगे।
- xii. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।

अनुभाग II

मूल्य आधारित प्रश्न (अनिवार्य)

10. "1922 तक गाँधीजी ने भारतीय राष्ट्रवाद को एकदम परिवर्तित कर दिया और इस प्रकार फरवरी 1916 में बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में अपने भाषण में किए गए वायदे को उन्होंने पूरा किया। अब यह व्यावसायिकों व बुद्धिजीवियों का ही आंदोलन नहीं रह गया था, अब हज़ारों की संख्या में किसानों, श्रमिकों और कारीगरों ने भी इसमें भाग लेना शुरू कर दिया। इनमें से कई गाँधीजी के प्रति आदर व्यक्त करते हुए उन्हें अपना 'महात्मा' कहने लगे। उन्होंने इस बात की प्रशंसा की कि गाँधीजी उनकी ही तरह के वस्त्र पहनते थे, उनकी ही तरह रहते थे और उनकी ही भाषा में बोलते थे, अन्य नेताओं की तरह वे सामान्य जनसमूह से अलग नहीं खड़े होते थे, बल्कि वे उनसे समानुभूति रखते तथा उनसे घनिष्ठ संबंध भी स्थापित कर लेते थे।"
- ऊपर दिए गए उद्धरण के आलोक में महात्मा गाँधी द्वारा दर्शाए गए किन्हीं चार मूल्यों को उजागर कीजिए।

उत्तर- गांधीजी द्वारा दर्शाए गए मूल्य

- i. आम इंसान के लिए प्रेम और आदर।
- ii. आपसी सद्भाव
- iii. उद्देश्य की प्राप्ति के लिए ईमानदारी
- iv. देश प्रेम
- v. सदाचार।
- vi. सत्याग्रह।

- vii. सहिष्णुता
- viii. अहिंसा
- ix. परानुभूति
- x. सांप्रदायिक सदभाव।
- xi. समानता
- xii. विश्वसनीयता
- xiii. स्वदेशी सामानों को बढ़ावा
- xiv. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।

खण्ड ग

दीर्घ-उत्तरीय प्रश्न

11. वर्णन कीजिए कि बौद्ध धर्म का विकास किस प्रकार हुआ है। बुद्ध की मुख्य शिक्षाओं की व्याख्या कीजिए।

उत्तर-

o बौद्ध धर्म का विकास-

- i. बुद्ध के जीवन काल में और उनकी मृत्यु के बाद भी बौद्ध धर्म तेजी के साथ फैला।
- ii. इसका कारण यह था कि लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे और तेजी से हो रहे सामाजिक बदलावों ने उलझने में बाध रखा था।
- iii. अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्व दिया गया न कि जन्म के आधार पर श्रेष्ठता को। खुद से छोटे और कमजोर लोगों की तरफ मित्रता और करुणा को महत्व देने के आदर्श काफी लोगों को भाए।
- iv. बौद्ध धर्म का विकास बौद्धिक साहित्य से भी हुआ जैसे त्रिपिटक (विनय पिटक, अधिधम्म पिटक, सुत्त पिटक), दीपवंश और महावंश, अशोकवदान, जातक और अन्य बौद्धिक साहित्य।
- v. बौद्धिक संघ, भिक्षु, भिक्षुनी का बुद्ध के संदेश का प्रचार।
- vi. स्तूप
- vii. अशोक के अभिलेख
- viii. धम्म-महामात्त
- ix. हीनयान और महायान परंपराएँ
- x. राजाओं का समर्थन
- xi. विदेशी तीर्थ यात्री
- xii. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।

o बौद्ध धर्म की शिक्षाएं:-

- i. विश्व अनित्य है और लगातार बदल रहा है।
- ii. यह आत्म विहिन (आत्मा) है क्योंकि यहाँ कुछ भी स्थाई या शाश्वत नहीं है।
- iii. दुख मनुष्य के जीवन का अतर्निहित तत्व है।

- iv. घोर तपस्या और विषयाशक्ति के बीच मध्य मार्ग अपनाकर मनुष्य दुनिया के दुखों से मुक्ति पा सकता है।
- v. भगवान का होना या न होना अप्रासंगिक है।
- vi. राजाओं और गृहपतियों को दयावान और आचारवान होने की सलाह दी।
- vii. व्यक्ति केंद्रित हस्तक्षेप और कर्म की कल्पना की।
- viii. निर्वाण के लिए अहं और इच्छा का खत्म हो जाना ताकि दुख के चक्र का अंत हो सके।
- ix. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।

अथवा

वर्णन कीजिए कि स्तूपों का निर्माण किस प्रकार किया गया। साँची के स्तूप संरक्षित रहे, परन्तु अमरावती के स्तूप संरक्षित नहीं रहे, ऐसा क्यों? स्पष्ट कीजिए।

उत्तर-

o स्तूप कैसे बनाए गए:-

- i. इन्हें पवित्र माना जाता था, यहाँ बुद्ध से जुड़े कुछ अवशेष जैसे उनकी अस्थियाँ या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड़ दिए गए थे।
- ii. अशोकवदान ग्रन्थ के अनुसार अशोक ने बुद्ध के अवशेषों के हिस्से हर महत्वपूर्ण शहर में बाँट कर उनके उपर स्तूप बनाने का आदेश दिया।
- iii. दूसरी शताब्दी ई. तक भरहुत साँची और सारनाथ का निर्माण हो चुका था।
- iv. कुछ दान राजाओं के द्वारा दिए गए थे (जैसे सातवाहन वंश के राजा)।
- v. शिल्पकारों द्वारा दिया गया दान (तारण द्वार)
- vi. सैकड़ों महिलाओं और पुरुषों ने दान के अभिलेखों में अपना नाम बताया है और कभी कभी रिस्तेदारों और अपना पेशा भी बताया है
- vii. इनमें भिक्षु और भिक्षुणियों ने भी दान दिया
- viii. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।

o साँची क्यों बच गया जबकि अमरावती नष्ट हो गया:

- i. भोपाल के शासको शॉहजहा बेगम और उनकी उत्तराधिकारी सुल्तानजहाँ बेगम ने इस प्राचीन स्थल के रखरखाव के लिए धन का अनुदान दिया।
- ii. संग्रहालय के लिए दान दिया।
- iii. अतिथिशाला बनाने के लिए दान दिया जहा रहते हुए जॉन मार्शल ने पुस्तकें लिखी
- iv. इस पुस्तक के प्रकाशन के लिए भी अनुदान दिया
- v. स्तूप पर किसी रेल ठकेदार या निर्माता की नजर नहीं पड़ी ,यह उन लोगों से भी बचा रहा जो ऐसी चीजों को यूरोप के संग्रहालयों में ले जाना चाहते थे
- vi. अंग्रेज और फ्रेंच इसके असली तोरण द्वार लेने के बजाए प्लास्टर प्रतिकृतियाँ ले गए।
- vii. एच०एच० कोल इन प्राचीन कलाकृति की लूट को आत्मघाती तथा असंरक्षणीय मानते थे।
- viii. उन्नीसवीं सदी के यूरोपियों को साँची में काफी रुची थी।

o अमरावती नष्ट क्यों हो गया

- i. अमरावती की खोज थोड़ी पहले हो गई थी तब तक विद्वान इसका महत्व नहीं समझ पाए थे।
- ii. वॉरन एलियट मूर्तियों और उत्कीर्ण पत्थरों को मद्रास ले गया।
- iii. 1850 के दशक में अमरावती के उत्कीर्ण पत्थर अलग अलग जगहों पर ले जाए जा रहे थे। कुछ पत्थर कलकत्ता में 'एशियाटिक सोसाइटी ऑफ बंगाल' पहुंचे तो कुछ मद्रास में 'इंडिया आफिस'।
- iv. अंग्रेज अधिकारियों के लोगों में अमरावती की मूर्तियाँ पाना कोई असामान्य बात नहीं थी।
- v. कुछ स्थानीय राजाओं ने भी अमरावती के स्तूप के अवशेषों पर मंदिर बनवा दिए।
- vi. कोई अन्य प्रासंगिक बिन्दु।
(संपूर्णरूप से परीक्षण)

12. भारत में मुगल शासकों द्वारा अभिजात-वर्ग में विभिन्न जातियों और धार्मिक समूहों के लोगों की भर्ती क्यों की जाती थी? व्याख्या कीजिए।

उत्तर- भारत में मुगल शासकों के द्वारा अभिजात वर्ग में विभिन्न नृ-जातिय तथा धार्मिक समूहों से होती थी।

- i. अभिजात वर्ग में नृ-जातिय और धार्मिक समूहों की भर्ती होती थी।
- ii. इससे यह सुनिश्चित किया जाता था कि कोई भी दल इतना बड़ा न हो कि वह राज्य की सत्ता को चुनौती दे सके।
- iii. मुगलों के अधिकारी वर्ग को गुलदस्तों के रूप में वर्णित किया जाता था जो वफादारी से बादशाह के साथ जुड़े हुए थे।
- iv. अकबर की शाही सेवा में तुरानी और ईरानी अभिजात वर्ग हुमायूँ के समय से ही चले आ रहे थे।
- v. कुछ अन्य बाद में मुगल दरबार में आये थे।
- vi. समाजों से विभिन्न समूहों और श्रेणियों के लोग शाही दरबार में आश्रय प्राप्त करते थे।
- vii. ज्ञान और निपुण व्यक्तियों के साथ-साथ योद्धाओं की भी अभिजात वर्ग में भर्ती की जाती थी।
- viii. राजपूतों और भारतीय मुसलमानों ने शाही सेना में अकबर के समय में प्रवेश लिया।
- ix. जहांगीर के शासन में ईरानियों को उच्च पद प्राप्त हुए।
- x. औरंगजेब ने राजपूतों को उच्च पद पर नियुक्त किया।
- xi. राजपूत कबिलों के साथ मुगल शाही भी राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने और गठबंधन बनाने का तरीका थी।
- xii. शासन में अधिकारियों के समूह में मराठे अच्छी खासी संख्या में थे।
- xiii. सुलह-ए-कुल के आदर्श को प्रबुद्ध शासन की आधारशिला बनाया गया।
- xiv. अभिजात वर्ग मिश्रित किशम का था अर्थात् उसमें ईरानी, तुरानी, अफगानी, राजपूत सभी शामिल थे।
- xv. सेन्य अभियानों में ये अभिजात अपनी सेनाओं के साथ भाग लेते थे तथा प्रांतों में साम्राज्य के अधिकारियों के रूप में भी कार्य करते थे।
- xvi. अभिजात मुगल शासकों के मनसबदार भी थे।
- xvii. सभी सरकारी अधिकारियों के दर्जे और पदों में दो तरह के संख्या विषयक ओहदे थे, जात और सवार।
- xviii. अभिजात वर्ग के लिए शाही सेवा शक्ति, धन तथा उच्चतम प्रतिष्ठा प्राप्त करने का जरिया थी जैसे मीर बख्शी, दीवाने आला और सद्र-उस-सुदुर।
- xix. शिक्षा और लेखाशास्त्र की ओर झुकाव वाले हिन्दु जातियों के सदस्यों को पदोन्नत किया जाता था

उदाहरण-टोडरमल।

xx. कोई अन्य प्रसांगिक बिन्दु।

अथवा

मुगल साम्राज्य में शाही परिवार की महिलाओं द्वारा निभाई गई भूमिका की व्याख्या कीजिए।

उत्तर- मुगल साम्राज्य में शाही परिवार की स्त्रियों द्वारा निभाई गई भूमिका-

- i. मुगल परिवार में बादशाह की पत्नियां, उपपत्नियां, रिश्तेदार, महिला परिचारिकाएं तथा गुलाम होते थे।
 - ii. हरम का प्रयोग मुगलों की घरेलू दुनिया की ओर संकेत देता है जिसका अर्थ होता है पवित्र स्थान।
 - iii. बहु विवाह प्रथा का प्रचलन था।
 - iv. विवाह में पुत्री को भेंट स्वरूप प्रायः एक क्षेत्र भी उपहार में दिया जाता था।
 - v. शासक वर्ग के बीच पदानुक्रमिक संबंधों की निरन्तरता सुनिश्चित हो जाती थी।
 - vi. मुगल परिवार में शाही परिवारों से आने वाली स्त्रियां (बेगमों) और अन्य स्त्रियों (अगहा) में अन्तर रखा जाता था।
 - vii. दहेज (महर) के रूप में अच्छा खासा नकद और बहुमूल्य वस्तुएं ऊंचा दर्जा और सम्मान की बात होती थी।
 - viii. सभी को नकद मासिक भत्ता तथा उपहार मिलते थे।
 - ix. उपपत्नियों (अगाया) की स्थिति सबसे निम्न थी।
 - x. वंश आधारित पारिवारिक ढांचा पूरी तरह स्थायी नहीं था।
 - xi. प्रेम और मातृत्व के आधार पर अगाह और अगाया भी बेगम की स्थिति पा सकती थी।
 - xii. पत्नियों के अतिरिक्त परिवार में अनेक महिला और पुरुष गुलाम होते थे।
 - xiii. गुलाम हिजड़े (ख्वाजासर) परिवार के अन्दर और बाहर के जीवन में रक्षक नौकर और व्यापार में दिलचस्पी लेने वाली महिलाओं के एजेंट होते थे।
 - xiv. नूरजहां के बाद मुगल रानियों और राजकुमारियों ने महत्वपूर्ण वित्तीय स्रोतों पर नियंत्रण रखना शुरू कर दिया।
 - xv. शाहजहां की पुत्रियां जहांआरा और रौशनआरा को ऊंचे शाही मनसबदारों के समान वार्षिक आय होती थी।
 - xvi. जहांआरा को सूरत के बंदरगाह नगर से विदेशी व्यापार से राजस्व प्राप्त होता था।
 - xvii. संसाधनों पर नियंत्रण में मुगल परिवार की महत्वपूर्ण स्त्रियों को ईमारतों व बागों के निर्माण का अवसर दे दिया था।
 - xviii. शाही परिवार पर गुलबदन ने हुमायूनामा लिखा है।
 - xix. जहांआरा ने शाहजहां की दिल्ली, चांदनी चौक की रूपरेखा तैयार की थी।
 - xx. कोई अन्य प्रासांगिक बिन्दु।
13. “बीसवीं सदी के प्रारम्भिक दशकों के दौरान शुरू हुई साम्प्रदायिक राजनीति देश के विभाजन के लिए मुख्यतः उत्तरदायी थी।”
कथन की जाँच कीजिए।
- उत्तर-** 20वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में साम्प्रदायिक अस्मिताएं।
- i. पृथक चुनाव - भारत सरकार अधिनियम - 1909, 1919 और 1935
 - ii. राजनीतिक व्यवस्था में धार्मिक अस्मिताओं का क्रियाशील प्रयोग।
 - iii. संप्रदाय अस्मिताओं का अत्यधिक बल
 - iv. ‘मस्जिद के सामने संगीत’ से मुसलमानों में रोश और गो-रक्षा आंदोलन

- v. आर्यसमाज का हिंदू सुधार आंदोलन
- vi. मुसलमानों में तबलीग और तंजीम का विस्तार
- vii. हिंदू महासभा और मुस्लिम लीग में दरार
- viii. 1937 में प्रांतीय चुनाव
- ix. क्रिप्स मिशन
- x. 'पाकिस्तान का प्रस्ताव' मुस्लिम लीग द्वारा (1946)
- xi. जिन्ना की पाकिस्तान की मांग
- xii. केबीनेट मिशन और ढीले-ढाले त्रिस्तरीय महासंघ का सुझाव
'प्रत्यक्ष कार्यवाही दिवस'
- xiii. सांप्रदायिक तनाव व दंगे
(अन्य कोई प्रासांगिक बिंदु)
(पूर्णरूप से मूल्यांकन)

अथवा

"भारत के विभाजन के कारण राष्ट्रवादी नेता पृथक् निर्वाचिका के प्रस्ताव पर और भड़कने लगे थे।" कथन की जाँच कीजिए।

उत्तर- पृथक् निर्वाचिका के विचार का विरोध

- i. राष्ट्रवादी नेता पृथक् निर्वाचिका के प्रस्ताव पर भड़कने लगे। उन्हें गृहयुद्ध, दंगों और हिंसा की आशंका दिखाई देती थी।
- ii. बी. पोंकर बहादुर ने पृथक् निर्वाचिका बनाए रखने के पक्ष में थे।
- iii. पृथक् निर्वाचिका के विचार ने संविधान सभा के राष्ट्रवादियों में गुस्सा और निराशा पैदा की।
- iv. अंग्रेजों ने इस संरक्षण के नाम पर अपना खेल-खेला
- v. इस मांग ने एक समुदाय को दूसरे के विरुद्ध कर दिया
- vi. सांप्रदायिक स्तर पर स विचारधारा ने लोगों को बाँट दिया राष्ट्र के टुकड़े कर दिए, रक्तपात को जन्म दिया और देश के विभाजन का कारण बनी।
- vii. यह राष्ट्र की एकता को नुकसान पहुँचाने वाली व्यवस्था थी।
- viii. यह लोकतंत्र के सिद्धांत के विरुद्ध थी।
- ix. जी. बी. पंत ने इसे अल्पसंख्यकों के लिए आत्मघाती माना।
- x. राजनीतिक एकता और राष्ट्र की स्थापना करने के लिए हर समूह को राष्ट्र के भीतर रामहित किया जाना था।
- xi. पृथक् निर्वाचिका से निष्ठाएँ खंडित होगी और एक शक्तिशाली राष्ट्र राज्य की स्थापना नहीं हो पाएगी।
- xii. अल्पसंख्यकों के अलगाव से उनकी लोकतांत्रिक प्रक्रिया में सक्रिय भूमिका कम हो जाएगी।
- xiii. अन्य कोई प्रासांगिक बिंदु

खण्ड घ

स्रोत आधारित प्रश्न

14. निम्नलिखित उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

'उचित' सामाजिक कर्तव्य

महाभारत के आदिपर्वन् से एक कहानी उद्धृत है :

एक बार ब्राह्मण द्रोण के पास, जो कुरु वंश के राजकुमारों को धनुर्विद्या की शिक्षा देते थे, एकलव्य नामक वनवासी निषाद (शिकारी समुदाय) आया। द्रोण ने जो धर्म समझते थे, उसे शिष्य के रूप में स्वीकार करने से मना कर दिया। एकलव्य ने वन में लौट कर मिट्टी से द्रोण की प्रतिमा बनाई तथा उसे अपना गुरु मान कर वह स्वयं ही तीर चलाने का अभ्यास करने लगा। समय के साथ वह तीर चलाने में सिद्धहस्त हो गया। एक दिन कुरु राजकुमार अपने कुत्ते के साथ जंगल में शिकार करते हुए एकलव्य के समीप पहुँच गए। कुत्ता काले मृग की चमड़ी के वस्त्र में लिपटे निषाद को देखकर भौंकने लगा। क्रोधित होकर एकलव्य ने एक साथ सात तीर चलाकर उसका मुँह बंद कर दिया। जब वह एकलव्य को तलाशा, उसने स्वयं को द्रोण का शिष्य बताया। द्रोण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से एक बार यह कहा था कि वह उनके सभी शिष्यों में अद्वितीय तीरंदाज बनेगा। अर्जुन ने द्रोण को उनका यह प्रण याद दिलाया। द्रोण एकलव्य के पास गए जिसने उन्हें अपना गुरु मानकर प्रणाम किया। तब द्रोण ने गुरु दक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने फौरन गुरु को अपना अँगूठा काट कर दे दिया। अब एकलव्य तीर चलाने में उतना तेज नहीं रहा। इस तरह द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निभाया : कोई भी अर्जुन से बेहतर धनुर्धारी नहीं रहा।

- i. द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य बनाने से मना क्यों किया?
- ii. द्रोण ने अर्जुन को दिए अपने प्रण को कैसे पूरा किया?
- iii. क्या आप द्रोण के व्यवहार को एकलव्य के प्रति न्यायसंगत ठहराते हो? यदि ऐसा है, तो एक कारण दीजिए।

उत्तर-

- i. द्रोण ने एकलव्य को अपना शिष्य के रूप में स्वीकार करने से मना इसलिए किया क्योंकि:-
 - i. एकलव्य एक वनवासी निषाद था।
 - ii. द्रोण (ब्राह्म) धर्म का समझते थे और इसलिए उन्होंने धर्म का पालन करने के लिए उसे इंकार कर दिया क्योंकि वह निम्न जाति अर्थात् निषाद था।
 - iii. द्रोण ने अपने प्रिय शिष्य अर्जुन को सभी शिष्यों में अद्वितीय तीरंदाज बनाने का वादा किया हुआ था।
- ii. द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निम्नलिखित प्रकार से निभाया
 - i. द्रोण एकलव्य के पास गए जिसने उन्हें अपना गुरु मानकर प्रणाम किया।
 - ii. द्रोण ने गुरु दक्षिणा के रूप में एकलव्य से उसके दाहिने हाथ का अँगूठा माँग लिया। एकलव्य ने फौरन उन्हें अँगूठा काट कर दे दिया।
 - iii. अब एकलव्य तीर चलाने में उतना तेज नहीं रहा। इस तरह द्रोण ने अर्जुन को दिए वचन को निभाया।
- iii. द्रोण का व्यवहार एकलव्य के लिए न्याय संगत नहीं था
(यह एक खुला प्रश्न है छात्र को अपने तर्किक तर्क और समझने के लिए उचित महत्व दिया जाना चाहिए।)
 - i. नहीं, यह न्यायसंगत नहीं था। उनका व्यवहार अर्जुन की तरफ पक्षपातपूर्ण था।

अथवा

हांजी, द्रोण अपना धर्म जानते थे। वैसे वो ब्राह्मण थे और शाही परिवार के गुरु भी थे तो वह निम्नजाति वर्ग को अपना शिष्य नहीं बना सकते थे।

- ii. धर्म सूत्रों और धर्मशास्त्रों में चार वर्गों के लिए आदर्श जीविका के नियम बनाए गए थे।
- iii. ब्राह्मणों का कार्य अध्ययन, वेदों की शिक्षा करवाना था शूद्रों के लिए मात्र एक ही जीविका थी - तीनों 'उच्च' वर्गों की सेवा करना।

15. निम्नलिखित उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

कॉलिन मैकेन्जी

1754 ई. में जन्मे कॉलिन मैकेन्जी ने एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार के रूप में प्रसिद्धि हासिल की। 1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया और 1821 में अपनी मृत्यु तक वे इस पद पर बने रहे। भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन तथा ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण करना आरंभ किया। वे कहते हैं, “ब्रिटिश प्रशासन के सुप्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लंबे समय तक जूझता रहा।” विजयनगर के अध्ययन से मैकेन्जी को यह विश्वास हो गया कि कंपनी, “स्थानीय लोगों के अलग-अलग कबीलों, जो इस समय भी जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा थे, को अब भी प्रभावित करने वाले इनमें से कई संस्थाओं, कानूनों तथा रीति-रिवाजों के विषय में बहुत महत्वपूर्ण जानकारी” हासिल कर सकती थी।

- i. कॉलिन मैकेन्जी कौन था?
- ii. मैकेन्जी ने विजयनगर साम्राज्य की पुनः खोज का प्रयास किस प्रकार किया?
- iii. ईस्ट इण्डिया कंपनी के लिए विजयनगर साम्राज्य का अध्ययन किस प्रकार उपयोगी था?

उत्तर-

- i. कॉलिन मैकेन्जी-
 - i. कॉलिन मैकेन्जी ईस्ट इंडिया कम्पनी का भारत में एक अभियंता, सर्वेक्षक तथा मानचित्रकार था।
 - ii. 1815 में उन्हें भारत का पहला सर्वेयर जनरल बनाया गया।
- ii. मैकेन्जी ने विजयनगर साम्राज्य की खोज निम्न प्रकार से की
 - i. उसने स्थानीय लोगों का इतिहास इकट्ठा किया
 - ii. स्थानीय परंपराओं का संकलन किया।
 - iii. ऐतिहासिक स्थलों का सर्वेक्षण किया
 - iv. भारत के अतीत को बेहतर ढंग से समझने और उपनिवेश के प्रशासन को आसान बनाने के लिए उन्होंने इतिहास से संबंधित स्थानीय परंपराओं का संकलन किया।
 - v. उन्होंने कहा ब्रिटिश प्रशासन के सुप्रभाव में आने से पहले दक्षिण भारत खराब प्रबंधन की दुर्गति से लम्बे समय तक जूझता रहा।
- iii. विजयनगर साम्राज्य की जानकारी ईस्ट इंडिया कम्पनी के लिए निम्न प्रकार से लाभप्रद थी।
 - i. मैकेन्जी का मानना था कि ईस्ट इंडिया कम्पनी को विजयनगर की महत्वपूर्ण जानकारी मिल सकती थी जैसे: 1. संस्थाओं 2. कानूनों 3. रीति रिवाजों के विषय
 - ii. इन सबका प्रभाव अब भी जनसंख्या को प्रभावित कर रहा था।

16. निम्नलिखित उद्धरण को ध्यानपूर्वक पढ़िए और उसके नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

“कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे”

5 अप्रैल, 1930 को महात्मा गाँधी ने दाण्डी में कहा था :

जब मैं अपने साथियों के साथ दाण्डी के इस समुद्रतटीय टोले की तरफ चला था तो मुझे यकीन नहीं था कि हमें यहाँ तक आने दिया जाएगा। जब मैं साबरमती में था तब भी यह अफ़वाह थी कि मुझे गिरफ्तार किया जा सकता है। तब मैंने सोचा था कि सरकार मेरे साथियों को तो दाण्डी तक आने देगी लेकिन मुझे निश्चय ही यह छूट नहीं मिलेगी। यदि कोई यह कहता कि इससे मेरे हृदय में अपूर्ण आस्था का संकेत मिलता है तो मैं इस आरोप को नकारने वाला नहीं हूँ। मैं यहाँ तक पहुँचा हूँ, इसमें शांति और अहिंसा का कम हाथ नहीं है; इस सत्ता को सब महसूस करते हैं। अगर सरकार चाहे तो वह अपने इस आचरण के लिए अपनी पीठ थपथपा सकती है क्योंकि सरकार चाहती तो हममें से हरेक को गिरफ्तार कर सकती थी। जब सरकार यह कहती है कि उसके पास शांति की सेना को गिरफ्तार करने का साहस नहीं था तो हम उसकी प्रशंसा करते हैं। सरकार को ऐसी सेना की गिरफ्तारी में शर्म महसूस होती है। अगर कोई व्यक्ति ऐसा काम करने में शर्मिंदा महसूस करता है जो उसके पड़ोसियों को भी रास नहीं आ सकता, तो वह एक शिष्ट-सभ्य व्यक्ति है। सरकार को हमें गिरफ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का खयाल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो।

कल हम नमक कर कानून तोड़ेंगे। सरकार इसको बर्दाश्त करती है कि नहीं, यह सवाल अलग है। हो सकता है सरकार हमें ऐसा न करने दे लेकिन उसने हमारे जत्थे के बारे में जो धैर्य और सहिष्णुता दिखायी है उसके लिए वह अभिनंदन की पात्र है...

यदि मुझे और गुजरात व देश भर के सारे मुख्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया जाता है तो क्या होगा? यह आंदोलन इस विश्वास पर आधारित है कि जब एक पूरा राष्ट्र उठ खड़ा होता है और आगे बढ़ने लगता है तो उसे नेता की ज़रूरत नहीं रह जाती।

- i. जब महात्मा गाँधी ने दाण्डी यात्रा शुरू की थी तो उनको कौन-सी आशंकाएँ थीं?
- ii. गाँधीजी ने ऐसा क्यों कहा कि इसके लिए सरकार बधाई की पात्र है?
- iii. 'नमक यात्रा' बहुत महत्वपूर्ण क्यों थी?

उत्तर-

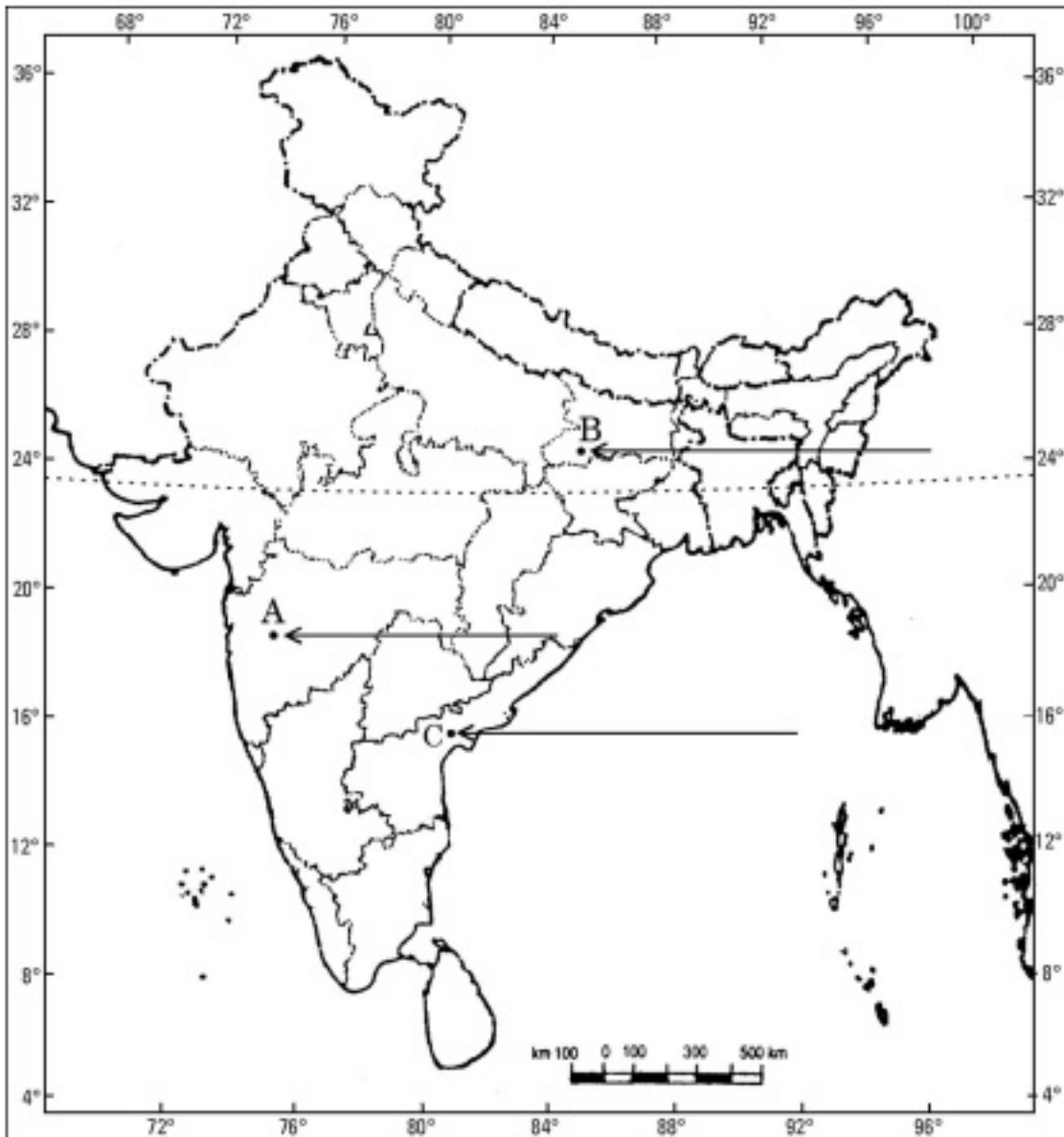
- i. दाण्डी मार्च शुरू करने से पहले गांधीजी को क्यों आशंकाएँ थी
 - i. गांधीजी को आशंका थी कि उन्हें दाण्डी नहीं पहुँचने दिया जाएगा
 - ii. उन्हें लगता था कि सरकार उनके साथियों को तो दाण्डी पहुँचने देगी पर उनको नहीं।
 - iii. उन्हें रास्ते में ही गिरफ्तार कर लिया जाएगा।
- ii. गांधीजी ने यह क्यों कहा - 'सरकार को बधाई दी जानी चाहिए'
 - i. सरकार ने धैर्य और सहनशीलता को प्रदर्शित किया और दाण्डी पहुँचने की अनुमति दी।
 - ii. गांधीजी ने कहा कि सरकार को हमें गिरफ्तार न करने के लिए बधाई दी जानी चाहिए भले ही उसने विश्व जनमत का खयाल करके ही यह फैसला क्यों न लिया हो।
- iii. नमक मार्च महत्वपूर्ण क्यों था
 - i. इसके चलते महात्मा गांधी दुनिया की नजर में आए।
 - ii. इसमें औरतों ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया
 - iii. अंग्रेजों को यह अहसास हुआ था कि अब उनका राज बहुत दिन तक नहीं टिक सकेगा।

iv. इस आंदोलन में पूरे राष्ट्र को जागरूक किया और इस पूरा राष्ट्र अंग्रेजों के विरुद्ध खड़ा हो गया।

खण्ड ड
(मानचित्र प्रश्न)

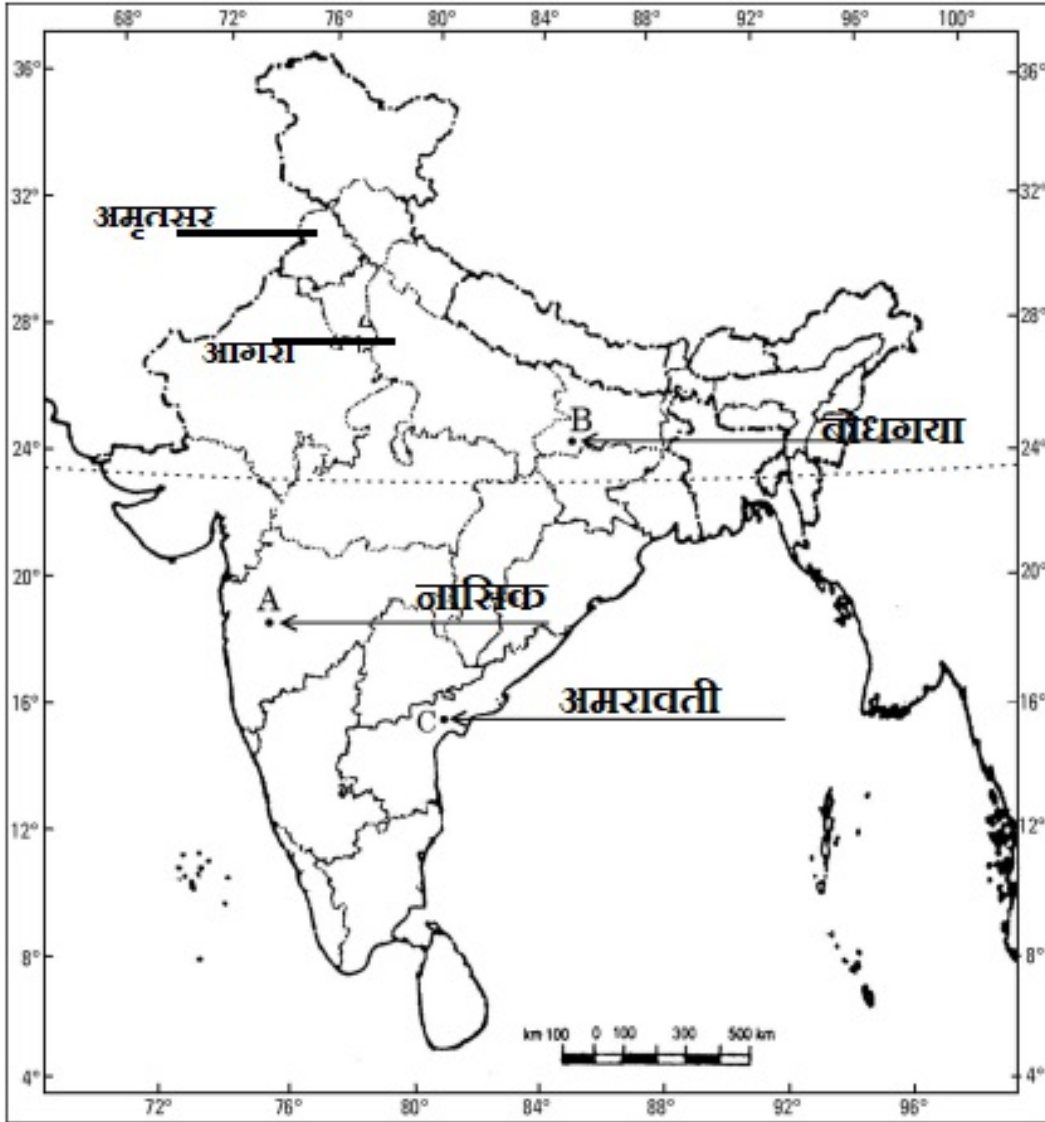
17. i. भारत के दिए गए राजनीतिक रेखा-मानचित्र में निम्नलिखित को उपयुक्त चिह्नों से दर्शाइए तथा उनके नाम लिखिए :
- (क) अमृतसर – राष्ट्रीय आंदोलन का महत्वपूर्ण केन्द्र।
- (ख) आगरा – बाबर के अधीन एक क्षेत्र।
- ii. भारत के दिए गए इसी राजनीतिक रेखा-मानचित्र पर, तीन स्थान जो प्रमुख बौद्ध स्थल हैं, को A, B और C से अंकित किया गया है। उन्हें पहचानिए और उनके सही नाम उनके पास खींची गई रेखाओं पर लिखिए।

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)
Outline Map of India (Political)



उत्तर-

भारत का रेखा-मानचित्र (राजनीतिक)
 Outline Map of India (Political)



● नोट: निम्नलिखित प्रश्न केवल दृष्टिबाधित परीक्षार्थियों के लिए प्र. सं. 17 के स्थान पर हैं:

- राष्ट्रीय आंदोलन के किसी एक केन्द्र का नाम लिखिए।
- बाबर के अधीन किसी एक क्षेत्र का नाम लिखिए।
- किन्हीं तीन बौद्ध स्थलों के नाम लिखिए।

उत्तर-

- अमृतसर/ चौरी-चौरा/ चम्पारन/ खेड़ा/ बम्बई/ कलकत्ता/ अहमदाबाद/ दाण्डी/ मद्रास/ दिल्ली/ बनारस/ लाहौर/ बारदौली/ कराची (काई एक)
- आगरा/ अम्बेर/ अजमेर/ गोआ/ पानीपत/ दिल्ली/ लाहौर (कोई एक)
- अजंता/ नासिक/ बोधगया (कोई तीन)